अगस्त २०१५

क़ीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

HAPPY BIRTHDAY 7th

मांसाहार करना चाहिए?

संपादकीय

बालमित्रों,

मांसाहार नहीं करना चाहिए, ऐसे संस्कार हमें जन्म-घुट्टी में ही मिलते हैं। फिर भी बड़े होने पर फैशन में आकर, दोस्तों से प्रेरित होकर या कुतूहलवश हम मांसाहर करने लगते हैं। कुछ नहीं तो अंडा खाने तक तो पहुँच ही जाते हैं।

मांसाहार मनुष्य के लिए किस तरह अहितकारी है, दैनिक जीवन में ही नहीं बल्कि धर्म और अध्यात्म में भी कितनी हद तक गिरा देता है, उसका सचोट वर्णन परम पूज्य दादाश्री ने किया है, जो इस अंक में प्रस्तुत है।

तो आइए, यह अंक पढ़ें और हम भी हमेशा के लिए मांसाहार से दूर रहें।

- डिम्पल मेहता

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ३ अंक : ५
अखंड क्रमांक : २९
अगस्त २०१५

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website:
kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

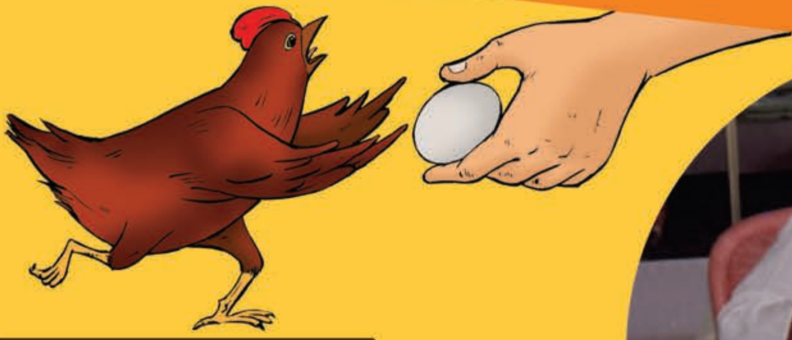

दादाजी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहा जाता है कि मांसाहार करने से नर्कगति मिलती है।

दादाश्री : यह बात बिल्कुल सही है। खाने की बहुत सी चीज़ें हैं। क्यों बकरे को काटते हो? मुर्गी को काटकर खाते हो? उन्हें दुःख नहीं होता होगा? उसके माँ-बाप को दुःख नहीं होता होगा? यदि आपके बच्चे को कोई खा जाए तो क्या होगा? जो जीव हमसे त्रस्त हों, जो भाग जाएँ, डरें, घबराएँ, उन्हें नहीं मारना चाहिए। मांसाहार मनुष्य के लिए अत्यंत अहितकारी खुराक है। मांसाहार निरी पाशवता है, विचारहीन दशा है और हम तो विचारशील हैं। एक ही दिन मांसाहार करने से मनुष्य का दिमाग खत्म हो जाता है, पशु जैसा हो जाता है। इसलिए यदि दिमाग को ठीक रखना हो तो अंडा खाना भी बंद कर देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : घर में हम अंडे खाते हैं।

दादाश्री : किसलिए खाए थे?

प्रश्नकर्ता : शरीर तंदुरस्त रखने के लिए खाए थे।

दादाश्री : अंडा हो या बच्चा, ये दोनों एक ही हैं। किसी का अंडा खाओ या किसी का बच्चा खाओ उसमें कोई फर्क नहीं है। किसी का बच्चा खा जाना पसंद है तुझे?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं।

दादाश्री : ऐसा क्यों?

प्रश्नकर्ता : पसंद ही नहीं है।

दादाश्री : तो फिर ये अंडे भी वही हैं, बच्चे ही हैं। तुम्हें नहीं लगता कि ये बच्चे ही हैं? उसमें से बच्चा ही पैदा होता है।

प्रश्नकर्ता : अंडे को दुःख नहीं होता। तो उसे खाना चाहिए या नहीं?

दादाश्री : अंडे को दुःख नहीं होता लेकिन अंडे के अंदर जो जीव होता है न, वह सुषुप्त अवस्था में है। वैसे तो मनुष्य का गर्भ चार-पाँच महीने का हो तो वह भी अंडे की तरह ही होता है, इसलिए उसे नहीं मारना चाहिए। अंडा जब फूटेगा, तब हमें पता चलेगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : तुरंत पता चलेगा।

दादाश्री : इसलिए हमें अंडा नहीं खाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दही तो खा सकते हैं। तो फिर इस दही में जो जीव हैं और अंडे के जीव में क्या फर्क है? दही खाने में कोई हर्ज नहीं है तो फिर अंडा खाने में क्या हर्ज है?

दादाश्री : ऐसा है, अंडे में जो जीव है, वह पंचेन्द्रिय जीव है और भगवान ने कहा हैं कि तुम सभी एकेन्द्रिय जीव खाना। क्योंकि जीव के अलावा और कोई खुराक तो है ही नहीं।

यह तो नई ही बात !

गाय कभी मांसाहार नहीं करती, घोड़ा और भैंस भी मांसाहार नहीं करते और उनको शौक भी नहीं है। बहुत भूखे हों, और मांस का आहार रखेंगे तब भी नहीं खाएँगे। इतना तो जानवरों में भी होता है। फिर हम तो मनुष्य हैं।

दादाश्री : लेकिन, तुम्हें यदि मांसाहार करना हो तो मुझे कोई हर्ज नहीं, खुद मुर्गी काटकर खाओ। जो खून देखते ही घबरा जाए, काँपने लगे, वह मांस खा ही कैसे सकता है? कोई काटे और तुम खाओ यह तो मीनिंगलेस है। तुम जब यह मुर्गा काटा जाता हो तब उसकी आर्तता (वेदना भरी चीख) सुनोगे न, तो पूरी ज़िंदगी वैराग्य नहीं जाए, इतनी आर्तता होती है। मैंने खुद सुना है। तब मुझे लगा कि ओहोहो, कितना दुःख होता होगा?

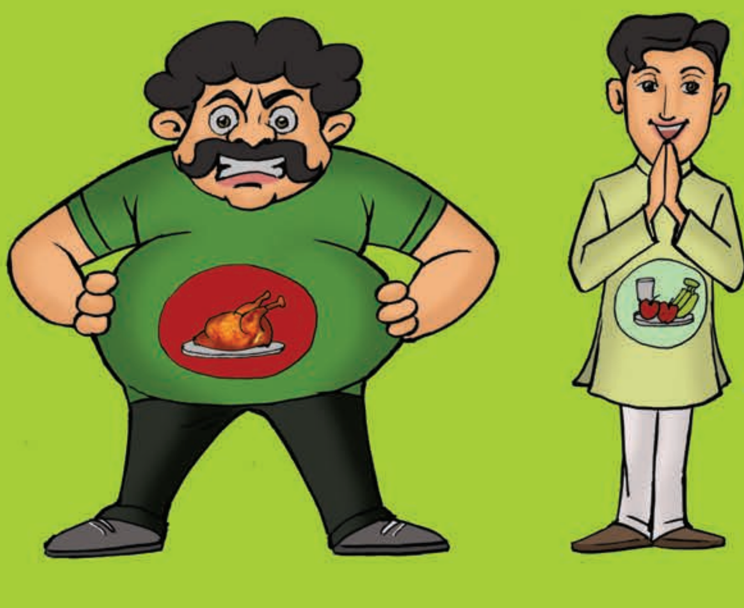

मांसाहार स्थूल खुराक है, इसलिए अध्यात्म की बुद्धि उत्पन्न नहीं होती। अध्यात्म में जाना हो तो लाइट फूड चाहिए कि जिससे मद नहीं चढ़े और जागृति बढ़े।

प्रोमिस

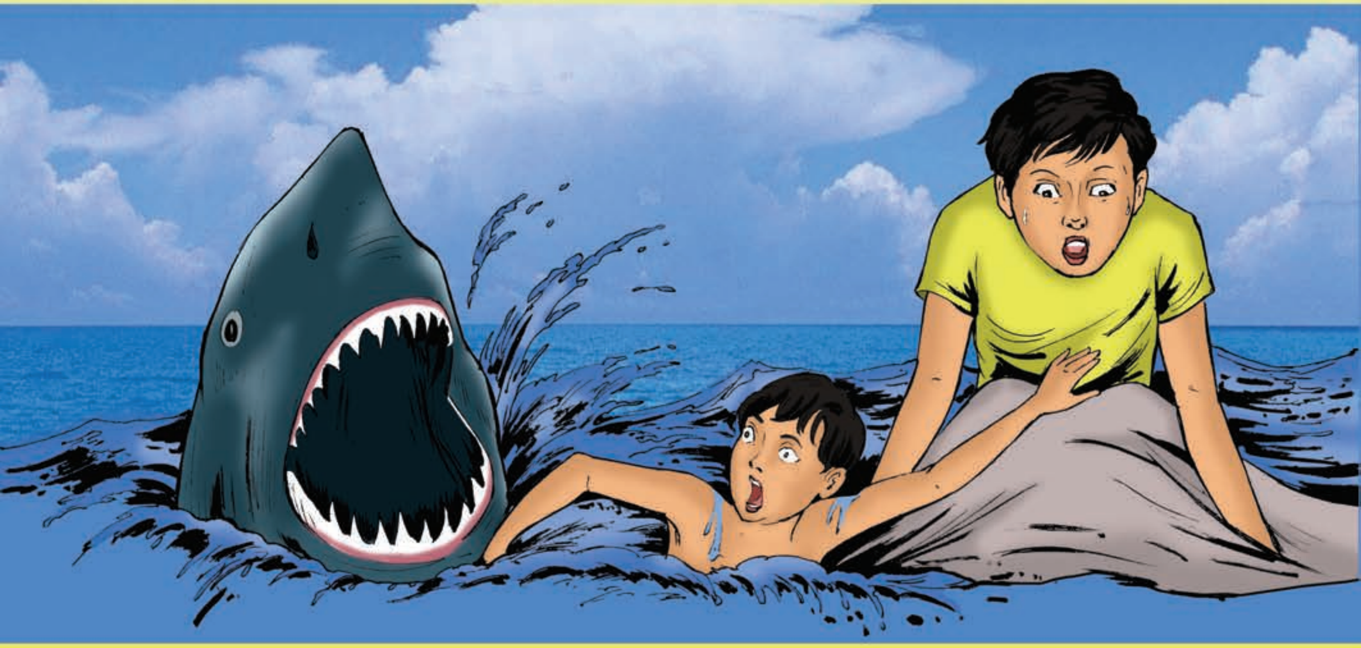

"धक, धक, धक, धक...." पार्थ के हृदय की धड़कन उसके कान में बज रही थी। समुद्र के प्राणियों के विकराल चेहरे देखकर पार्थ व्याकुल हो गया था। "इस समुद्र के बीचों-बीच मैं क्या कर रहा हूँ?" उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। भय के कारण उसका पूरा शरीर कांप रहा था। समुद्र की लहरों के थपेड़े खाकर वह बहुत कमज़ोर हो गया था। अचानक, एक शार्क मछली उस पर झपटी और उसके मुँह से चीख निकल गई, "बचाओ!"

पार्थ का हाथ ज़ोर से किसी चीज़ पर पड़ा और तभी ज़ोर से अलार्म की घंटी बजी। पार्थ की आँख खुल गई। सात बजे का अलार्म बज रहा था। झट से पार्थ बिस्तर पर बैठ गया। अलार्म बंद करके सिर पर आया हुआ पसीना पोंछा। सपना था ऐसा सोचकर पार्थ को थोड़ी देर के लिए राहत हुई लेकिन फिर से उसका हृदय भारी हो गया।

वैसे तो कल शाम से ही पार्थ को भयंकर बैचेनी हो रही थी। बार-बार उसकी आँखों के सामने वही दृश्य आ रहा था। आँखें बंद करने पर भी वह दृश्य उसके हृदय से जा नहीं रहा था।

बात यह थी कि कल पार्थ अपने दोस्तों के साथ कैम्पिंग पर गया था। महीनों से वह इस ट्रिप का इंतज़ार कर रहा था, जब से अमरीका की धरती पर उसने कदम रखा तब से उसने चैन की साँस नहीं ली थी। बस काम, काम और काम, इसलिए जब से फ्रेन्ड्स के साथ कैम्पिंग जाने का प्लैन बना तब से उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था।

जैसा सोचा था वैसा पार्थ ने कैम्पिंग में बहुत मज़ा किया। सभी फ्रेन्डस ने मिलकर तरह-तरह के खेल खेले, गीत गाए, कुदरती सौंदर्य के फोटो खींचे और बहुत धमाल-मस्ती की। दोपहर तक तो सभी थककर चूर हो गए। थोड़ा आराम करके सभी ने फिशिंग (मछली पकड़ने का खेल) का प्लैन बनाया। पार्थ फिशिंग से परिचित नहीं था और फिशिंग करने में उसे कोई इन्ट्रस्ट भी नहीं था। लेकिन फ्रेन्डस के आग्रह से विवश होकर उनके साथ लेक पर गया। लेक पर वह खूबसूरत कुदरती सौंदर्य का मज़ा ले रहा था, तभी एक फ्रेन्ड ने आवाज़ लगाई, "पकड़ ली!"

उसने देखा तो उसके फ्रेन्ड के फिशिंग-रॉड पर एक मछली फँसी हुई थी। मछली को रॉड से निकालने पर मछली थोड़ी देर तड़पी और फिर उसकी साँस बंद हो गई। उसकी असहाय तड़प और वेदना देखकर पार्थ हिल गया। अपने दोस्त के उत्साह को देखकर उसे मन में लगा, "किसी जीव को तड़पाकर इतना खुश कैसे हो सकते हैं?" मछली की तड़प और वेदना का दृश्य तो पार्थ ने सहन कर लिया लेकिन खाना बनाने के लिए जब उसके फ्रेन्ड ने मछली को काटा तब वह दृश्य उससे सहन नहीं हुआ। उसे ज़बरदस्त कँप-कँपी आ गई।

कल का देखा हुआ दृश्य उसके हृदय से जा नहीं रहा था। ऊपर से रात के सपने ने उसे बहुत बैचेन कर दिया। हाथ में चाय का कप लेकर पार्थ बालकनी में बैठा। उसके मन में विचारों का घमासान चल रहा था। एक तरफ उसे अपने फ्रेन्ड पर गुस्सा आ रहा था और दूसरी ओर अपनी गुनहगारी पर ज़बरदस्त पश्चाताप हो रहा था। वह भी तो हमेशा नॉनवेज खाने के पक्ष में ही था। वह पुरानी यादों में खो गया।

उस दिन पार्थ अपनी बड़ी बहन के साथ सुपर-मार्केट गया था। पार्थ ने एक नाश्ते का पैकेट उठाया तब दीदी ने उसे टोका, "पार्थ यह पैकेट रख दे। देख इस पर "रेड" सिम्बल है। इसका मतलब कि इसमें कोई ऐनिमल प्रोडक्ट है। हमारे काम का नहीं है।"

"क्या दीदी, तुम भी! इतनी ज्यादा चिक-चिक करने की क्या ज़रूरत है? ऐनीमल प्रोडक्ट है तो क्या हो गया? मैंने तो नहीं मारा है उस ऐनीमल को! और मुझे तो यह बहुत टेस्टी लगता है।" पार्थ ने दलील की।

"तुमने नहीं मारा, लेकिन मारनेवाले से खानेवाले को ज्यादा पाप लगता है। यदि तुझ में हिम्मत है तो खुद मारकर खा न! यदि एक बार मुर्गी कटते देख लेगा तो पूरी ज़िंदगी नॉनवेज खाने का नाम नहीं लेगा! तुझे शायद पता नहीं है कि नॉनवेज के परमाणु अपने हार्ट पर असर करते हैं, और अंत में हार्ट फेल भी हो सकता है।" दीदी ने पार्थ को सावधान किया।

"लेकिन दीदी, नॉनवेज तो सभी खाते हैं। थोड़े महीनों बाद अमरिका जाऊँगा। वहाँ मुझे सभी जगह वेज फूड तो नहीं मिलेगा न? इसलिए मुझे भी नॉनवेज खाना ही पड़ेगा।" पार्थ ने अपनी दलील ज़ारी रखी।

उस समय तो दीदी ने पार्थ से कुछ नहीं कहा लेकिन घर जाकर गांधी जी की "सत्य के प्रयोग" किताब देते हुए बोलीं, "पार्थ, जब गांधी जी पहली बार इंग्लैन्ड गए थे, तब उनकी उम्र करीब १८ साल की होगी। उस समय उनकी माता ने उनसे मांसाहार नहीं करने का प्रोमिस माँगा। एक क्षण की भी देर किए बिना गांधी जी ने अपनी माता को प्रोमिस दिया। और इतिहास गवाह है कि गांधी जी ने माता को दिया हुआ प्रोमिस ज़िंदगीभर निभाया। अब तू ही मुझे बता कि यदि १८८८ में गांधी जी को लंदन में वेज फूड मिल रहा था तो आज, जब पूरी दुनिया में वेजिटेरियनिज़म (शाकाहारी फूड) के लिए इतनी जागरूकता है, तो तुझे क्या परेशानी होनेवाली है? यदि मांसाहार नहीं करने का अपना निश्चय स्ट्रोंग हो तो कोई भी संयोग या व्यक्ति हमें मांसाहार नहीं करवा सकता। क्या तू मुझे प्रोमिस देगा कि तू अमरिका जाकर मांसाहार नहीं करेगा?"

उस दिन पार्थ ने कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन आज फिर से दीदी के वे शब्द पार्थ के कान में गूँज रहे थे और वह एकदम वर्तमान में आ गया। चाय का कप रखकर उसने अलमारी से गांधी जी की "सत्य का प्रयोग" किताब निकाली। किताब पर धूल जमी हुई थी। धूल साफ करके वह किताब पढ़ने लगा। माता को दिया गया प्रोमिस निभाने के लिए गांधी जी ने जिस संयम का पालन किया था, उसे पढ़कर पार्थ को बहुत शक्ति मिली। पढ़ते-पढ़ते समय कहाँ निकल गया उसे पता ही नहीं चला।

तभी फोन की घंटी बजी।

"हाय पार्थ, कैसे हो?" इन्डिया से दीदी का फोन था। पार्थ ने दीदी के साथ बहुत बातें की।

फोन रखने से पहले पार्थ ने कहा, "दीदी, आपको याद है आपने मुझ से एक प्रोमिस माँगा था?"

"हाँ," दीदी ने कहा।

"दीदी, आज मैं आपको प्रोमिस देता हूँ।" धीरे से पार्थ ने कहा।

"यदि मांसाहार नहीं करने का अपना निश्चय स्ट्रोंग हो तो कोई भी संयोग या व्यक्ति हमें मांसाहार नहीं करवा सकता।"

एक दिन फार्महाउस पर...

रविवार की सुबह थी। घड़ी में आठ बजे थे, तब तक तो नीति नहाकर तैयार हो गई थी। इतने में गाड़ी का होर्न सुनाई दिया।

"नीति! जल्दी कर, बेटा। मीरा अपने डैडी के साथ तुम्हें लेने के लिए आ गई है।" नीति की मम्मी ने आवाज़ लगाई।

"बस मम्मी, तैयार ही हूँ," कंधे पर पर्स डालकर नीति बाहर दौड़ी, "बाइ मम्मी, मीरा के डैडी शाम तक मुझे घर छोड़ देंगे।"

"ओ.के, हेव फन, बेटा।" ऐसा कहकर मम्मी घर के अंदर आ गई और काम में लग गई।

नीति और उसकी फ्रेन्ड मीरा ने पूरा दिन मीरा के मामा के फार्म हाउस पर बिताने का प्लैन बनाया था। नीति ने मीरा से फार्म हाउस की इतनी बातें सुनी थीं कि फार्म हाउस देखे बिना ही उसका एक सुंदर सा चित्र नीति के भीतर खिंच गया था।

जैसे ही नीति गाड़ी में बैठी कि आगे की सीट पर बैठी हुई मीरा ने पीछे देखते हुए कहा, "मामी ने मुझे फोन पर कहा है कि हमारे लिए कुछ सरप्राइज़ है।"

क्या सरप्राइज़ होगा? उसका अनुमान लगाने में ही पूरा रास्ता कैसे निकल गया उसका पता ही नहीं चला।

जैसे ही पापा ने गाड़ी पार्क की, मीरा गाड़ी में से बाहर कूदी और दौड़कर मामी के गले लग गई, "मामी, क्या सरप्राइज़ है? जल्दी बताओ न।"

"अरे, मेरी बेटी, कितनी बैचेन हो रही है!" प्रेम से मामी ने मीरा के गाल खींचे और कहा, "बात यह है कि तेरी फ्रेन्ड गौरी गाय ने एक बछड़े को जन्म दिया है। तुझे और नीति को उसके बच्चे का नाम रखना है।"

"सच? हाउ स्वीट!" मीरा उछल पड़ी, "चल नीति, हम गौरी को देखने चलते हैं।"

तबेले में जाकर देखा तो गौरी गाय अपने बछड़े को प्यार कर रही थी। छोटे से बछड़े को देखकर नीति बहुत उमंग में आ गई।

प्रेम से नीति ने बछड़े के सिर पर हाथ फिराया और कहा, "मीरा, इस बच्चे का नाम "गोपी" रखें?"

"श्योर!" कहकर मीरा, गोपी के पास पालथी मारकर बैठ गई। मीरा और नीति ने गोपी के साथ मीठी-मीठी भाषा में बहुत बातें की।

"चल, अब मैं तुझे किसी और से मिलवाऊँ।" थोड़ी देर रुककर मीरा नीति को खरगोशों के पास ले गई। छोटे आकर्षक

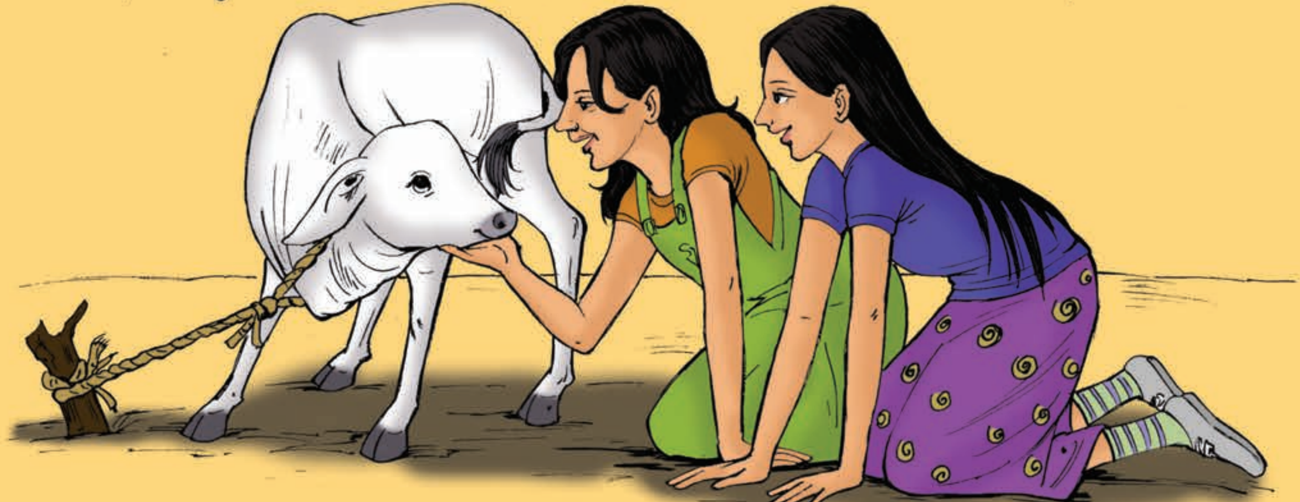

खरगोशों को देखकर नीति पगला गई। मीरा और नीति खरगोशों के साथ खेल रहे थे, तभी उन्हें एक दर्दभरी आवाज़ सुनाई दी।

"मीरा, वहाँ देख। एक मुर्गी का बच्चा घायल पड़ा है।" बच्चे की तरफ इशारा करते हुए नीति उसके पास दौड़ी।

"अरे, ये तो सोनु है।" मीरा ने उस बच्चे को पहचान लिया। पिछली बार जब वह फार्म हाउस पर आई थी, तब उसने ही इस बच्चे का नाम "सोनु" रखा था।

नीति बच्चे को हाथ में उठाने गई तो बच्चा घबराकर और ऊँची आवाज़ में रोने लगा। प्यार से नीति ने बच्चे से कहा, "सोनु, मैं तुझे मारनेवाली नहीं हूँ। तुझे चोट लगी है न, इसलिए तेरी दवाई करनेवाली हूँ।"

बच्चे के घाव पर नीति ने मिट्टी का लेप लगाया और उसे एक सुरक्षित जगह पर बिठाया। उसे छोड़कर मीरा और नीति तालाब पर बत्तखों को दाना डालने गई। पूरा दिन कहाँ निकल गया, उसका पता ही नहीं चला। लौटते समय नीति ने मामा-मामी का आभार माना और कहा, "मीरा की तरह मैंने भी गौरी, गोपी और सोनु उन सभी से पक्की दोस्ती कर ली है। मैं इनके साथ खेलने के लिए फिर आऊँगी।"

"ज़रूर आना।" कहकर मामा-मामी ने दोनों को विदा किया।

घर पहुँचकर नीति मम्मी के गले लग गई, "मम्मी-मम्मी...आज मुझे इतना मज़ा आया कि मैं आपसे क्या कहूँ।"

"पहले तू जल्दी फ्रेश होकर खाना खाने आ जा। खाते-खाते सभी बातें बताना। मैंने तेरा पसंदीदा खाना बनाया है।"

नीति नहाकर डाइनिंग टेबल पर आ गई। प्लेट में हेम-बर्गर और चिकन-टिक्का मसाला परोसे हुए थे। प्लेट में चिकन टिक्का देखकर नीति को थोड़ी देर के लिए चक्कर आ गए। वह चकरा गई और प्लेट को देखती ही रही।

मम्मी को आश्चर्य हुआ, "क्या कर रही हो नीति, खा क्यों नहीं रही है?"

मम्मी के सवाल से नीति वर्तमान में वापस लौटी, "मम्मी, यह चिकन कभी तो जीवित होगा न?"

फिर नीति ने धीरे से पूछा, "क्या मेरे डिनर के लिए किसी ने कहीं तो इसे मारा होगा?"

"और क्या, जीवित तो होगा ही न! किसी कसाई ने इसे मारा होगा!" कहकर मम्मी ने हल्की आह भरी।

नीति की आँखों पर बंधी हुई पट्टी अचानक खुली। खुद जिन प्राणियों का मांस खाती थी, उन्हें कभी जीवित समझा ही नहीं था। और आज उसने उन सब प्राणियों के साथ दोस्ती की थी।

नीति के शरीर में कंपन सी होने लगी। सोनु को की गई मरहमपट्टी उसे याद आ गई।

"छोटे से घाव के लिए भी सोनु कितना तड़प रहा था, तो फिर जब इस चिकन को मारा होगा, तब उसे कितनी भयंकर वेदना हुई होगी?"

नीति का दिल भर आया। हेम-बर्गर को उठाकर उसने मम्मी से पूछा, "मम्मी, "हेम" यानी? हेम-बर्गर में क्या होता है?"

नीति ने पहले कभी ऐसे प्रश्न मम्मी से नहीं पूछे थे। अचानक उसकी कुतूहलता देखकर मम्मी को आश्चर्य हुआ। "हेम यानी काउ-मीट (गाय का मांस)"

मम्मी ने संक्षिप्त में जवाब दिया।

थोड़ी देर के लिए नीति की साँस रुक गई। उसे ज़बरदस्त घबराहट होने लगी। वह दौड़कर बाथरूम में दौड़ गई और भीतर से स्टॉपर लगा दिया।

शीशे में अपना चेहरा देखने में भी उसे शर्म आ रही थी। उसकी आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे।

"हेम-बर्गर में गाय का मांस होता है? इसका मतलब मेरी प्लेट में गोपी या गौरी का कोई फ्रेन्ड या सगा-संबंधी भी हो सकता है।" इस विचार से कुछ खाए बिना ही उसे उबकाई आने लगी।

उसके मन में विचारों की श्रृंखला चालू ही रही। "यदि हेम-बर्गर बनाने के लिए कोई कभी गौरी को मार दे तो? गोपी उसकी मम्मी के बिना कैसे रह पाएगा?"

गौरी का गोपी को प्यार करता हुआ दृश्य उसकी आँखों के सामने आ गया और वह सिसक-सिसककर रोने लगी। तभी उसकी मम्मी ने बाथरूम का दरवाज़ा खटखटाया, "क्या हुआ नीति? बेटा, दरवाज़ा खोल..."

नीति ने धीरे से स्टॉपर खोला और मम्मी के गले लग गई। कुछ देर तक वह कुछ भी नहीं बोली। उसका गला भर आया था। मम्मी ने उसके आँसू पोछें और उसे पलंग पर बिठाया। नीति थोड़ी शांत हुई। मम्मी का हाथ अपने हाथ में लेकर बोली, "मम्मी, प्राणियों को भी हमारी तरह वेदना और आसक्ति होती हैं। प्राणी मेरे दोस्त हैं। मैं अपने दोस्तों को कैसे खा सकती हूँ? मैं प्रोमिस करती हूँ कि आज से मैं नॉन-वेज फूड छूऊँगी भी नहीं।"

नॉनवेज के बारे में महान पुरुषों के विचार

१

जब तक मनुष्य प्राणियों की हत्या करेंगे, तब तक वे एक-दूसरे की हत्या करेंगे। जो खून और पीड़ा के बीज बोते हैं, वे कभी प्रेम और आनंद प्राप्त नहीं कर सकते।

पायथागोरस
(मेथेमेटीशियन-गणित शास्त्री)

२

किसी भी राष्ट्र की महानता और नैतिक प्रगति का मूल्यांकन, उस राष्ट्र का अपने प्राणियों के प्रति व्यवहार से हो सकता है।

महात्मा गांधी

३

अहिंसा सब से बड़ा सिद्धांत है, और संपूर्ण उच्च कोटि का ध्येय है। जब तक हम दूसरे जीवों को नुकसान पहुँचाना बंद नहीं करेंगे, तब तक हम जंगली कहलाएँगे।

थॉमस एडिसन
(साइन्टिस्ट)

४

मेरा शरीर दूसरे प्राणियों की कब्र नहीं बनेगा।

लीओनार्डो द विन्ची
(पेन्टर, साइन्टिस्ट, आर्कीटेक्ट, लेखक)

५

लोग मांसाहार करते हैं और सोचते हैं कि वे बैल जैसे बलवान बन जाएँगे, लेकिन वे लोग भूल जाते हैं कि बैल खुद घास खाते हैं।

पीनोकारूसो(इटालियन लेखक)

६

क्या तुम किसी प्राणी की आँख में देखकर कह सकते हो, "मेरी भूख तेरी पीड़ा से ज्यादा महत्त्व की है?"

मोबी(अमरिकन म्यूज़िश्यन और फोटोग्राफर)

७

प्राणी मेरे मित्र हैं और मैं अपने मित्रों को नहीं खाता।

जॉर्ज बर्नार्डशॉ, लेखक

८

अगर बूचड़खानों की दीवारें काँच की होती तो सभी वेजिटेरियन होते।

सर पोलमेकार्टनी
(ब्रिटिश म्यूज़िश्यन)

जीवंत उदाहरण

मुस्लिम संतों में अनेक संतों के नाम मशहूर हो गए। उनमें से संत राबिया का नाम गर्व से लिया जाता है। एक दिन राबिया जी जंगल में गए। जंगल में वे पशु-पंछियों को देख रहे थे। धीरे-धीरे पेड़ पर बैठे हुए और आकाश में उड़ते पंछी राबिया जी के पास आ पहुँचे। हिरन, लोमड़ी, भेड़िया आदि जानवर राबिया जी के पैर को जीभ से चाट रहे थे। पंछी राबिया जी के कंधे और सिर पर बैठकर खेल रहे थे। राबिया जी पशु-पंछियों के बीच बहुत आनंद महसूस कर रहे थे।

इतने में ही संत हसन बसरी घूमते-घूमते वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने दूर से देखा कि पशुओं और पंछियों ने संत राबिया को घेर लिया है! वे राबिया जी के नज़दीक आए कि सारे पशु-पंछी वहाँ से चले गए!

इससे संत हसन बसरी को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने दुःखी स्वर में राबिया जी से पूछा : "राबिया जी! इतने सारे पशु-पंछी आपको चिपके हुए थे, और जब मैं आपके नज़दीक आया तो वे तुरंत ही क्यों चले गए? जैसे मैं कोई डरावना इंसान हूँ, ऐसे मुझ से डरकर चले गए!"

राबिया जी ने संत हसन बसरी को पूछा : "आप क्या खाते हो?"

हसन बसरी ने कहा कि, "इसका आहार के साथ क्या संबंध है?"

राबिया जी ने जवाब दिया कि : "संबंध है, इसलिए तो आपको पूछ रही हूँ!"

हसन बसरी ने जवाब दिया : "मैं मांस खाता हूँ।"

"आपको पशु-पंछियों का मांस खाना है और इच्छा करते हो कि वे आपके पास आएँ और आपको लाड़ करें?" हिंसक डर सब को लगता है! संत राबिया ने कहा।

हसन बसरी की आँखे खुल गईं। उसी क्षण उन्होंने मांसाहार नहीं करने का दृढ़ संकल्प किया।

चलो खेलें...

१. नीचे दी गई खाली जगह में ब्रैकिट में से ऐसे शब्द ढूँढकर रखो कि जिससे आगे और पीछे दो नए शब्द बने।

उदाहरण : Base _____ game Ball

Baseball - ballgame

1. Boat_____hold
2. Sit______bone
3. Play______floor
4. Key______reaction
5. Phone____back
6. Fire______pilot
7. God______hood
8. Ball______pencil
9. water______pen
10. back______way

(Mother, Pen, Ground, Door, Fountain, Chain, House, Call, Fighter, Back)

२. प्रस्तुत चित्र में नीचे दिए गए गोलाकार में दी हुई चीज़ें ढूँढो।

ऐतिहासिक गौरवगाथा

मगध देश में ममण नामक एक सेठ रहते थे। एक दिन उनके घर एक साधु भिक्षा लेने के लिए पधारे। साधु को देखकर वे एकदम उल्लास में आ गए, "ओहोहो! मेरे जैसे अभागे के यहाँ मुनिवर पधारे हैं? सच, मैं तो धन्य हो गया।"

अत्यंत उल्लास में उन्होंने बहुत ही प्रेम से उनके घर कहीं से आया हुआ सिंह केसरिया लड्डू साधु को भिक्षा में दिया।

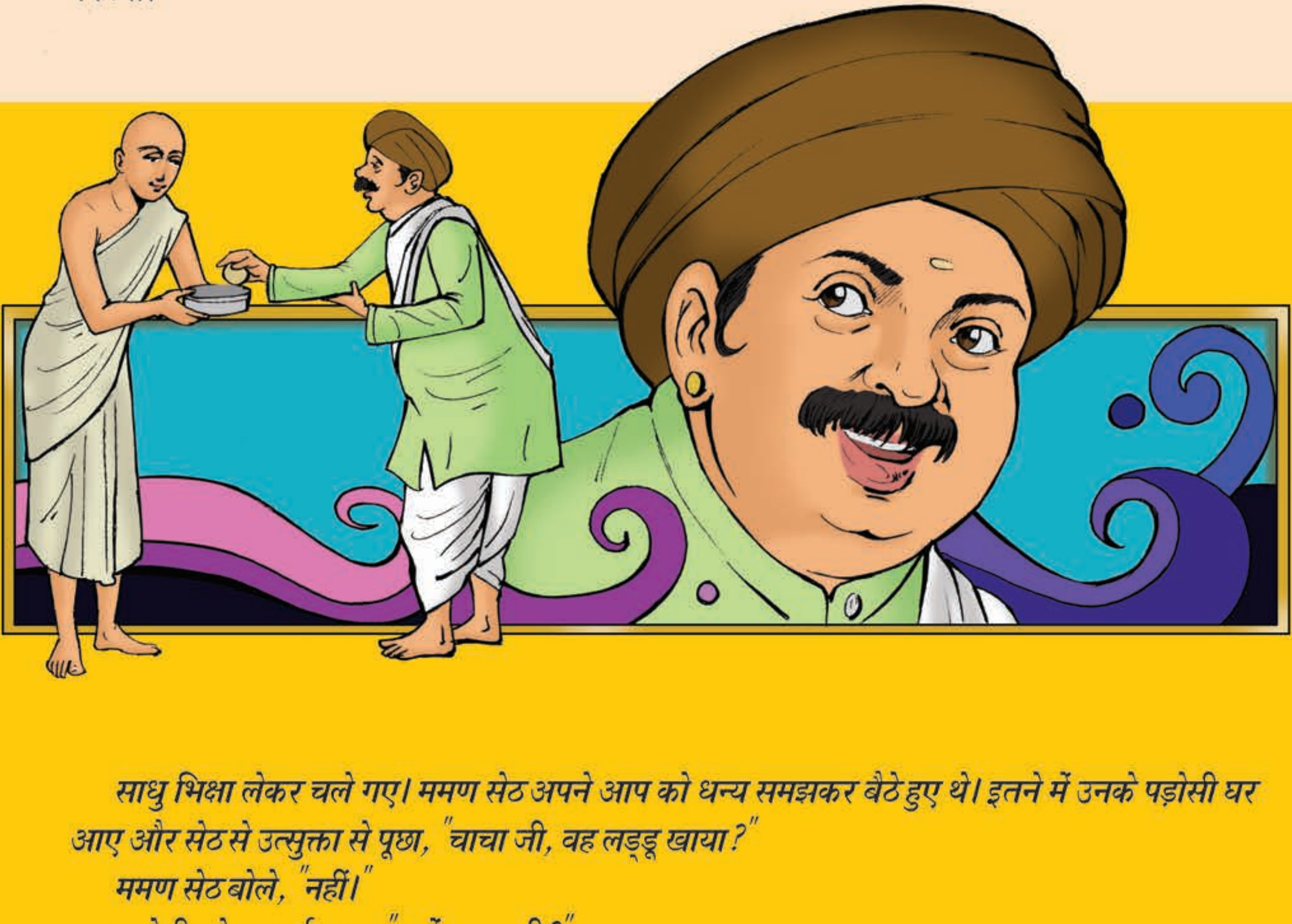

साधु भिक्षा लेकर चले गए। ममण सेठ अपने आप को धन्य समझकर बैठे हुए थे। इतने में उनके पड़ोसी घर आए और सेठ से उत्सुक्ता से पूछा, "चाचा जी, वह लड्डू खाया?"

ममण सेठ बोले, "नहीं।"

पड़ोसी को आश्चर्य हुआ, "क्यों चाचा जी?"

ममण सेठ ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा, "अभी घर पर भिक्षा लेने के लिए मुनि भगवंत पधारे थे। उनके पात्र में डाल दिया। मुझे बहुत आनंद हुआ। दान का ऐसा अचानक लाभ मिल जाने से मैं तो धन्य हो गया।"

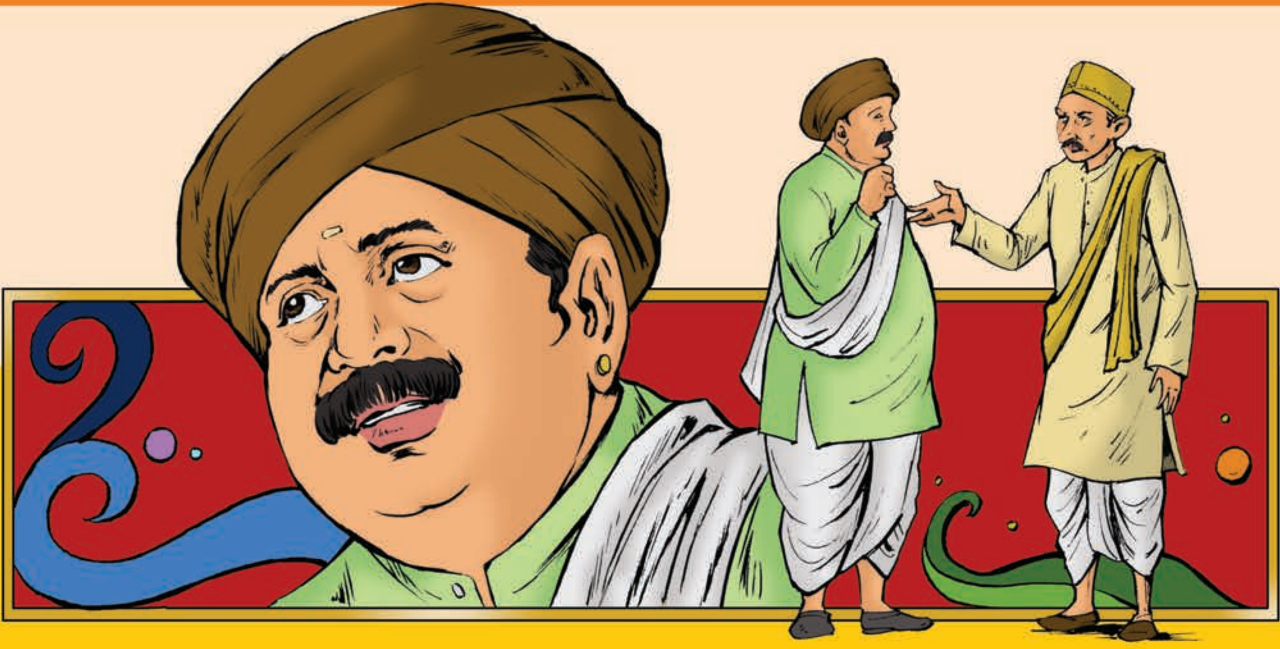

यह सुनकर पड़ोसी से रहा नहीं गया। वह बोल उठा, "अरे चाचा जी! ऐसी बेवकूफी की जाती होगी?"

सेठ को समझ में नहीं आया। उन्होंने पूछा, "क्यों क्या हुआ?"

पड़ोसी ने समझाते हुए कहा, "क्या होगा? आपको मुनि को भिक्षा ही देनी थी तो और कुछ दिया होता। आपने सिंह केसरिया लड्डू क्यों दे दिया?"

सेठ समझे नहीं इसलिए उन्होंने पूछा, "इसमें क्या हर्ज है?"

पड़ोसी ने कहा, "अरे, ज़िंदगी में आपने ऐसा स्वाद नहीं चखा होगा, जैसा स्वाद इस सिंह केसरिया लड्डू में था। ऐसा उत्तम, स्वादिष्ट लड्डू जीवन में पहली बार आपके हाथ में आया और आपने उसे मुनि भगवंत को दे दिया! इसे बेवकूफी नहीं कहेंगे तो और क्या कहेंगे?"

यह सुनकर ममण सेठ के चेहरे पर जो आनंद था वह उड़ गया। जो लड्डू मुनि को देने से वे अपने आप को धन्य समझ रहे थे, उसी कार्य की वजह से वे बहुत ही पश्चाताप करने लगे, "अरेरे...मैंने इतना स्वादिष्ट लड्डू भिक्षा में दे दिया? मुझे ऐसा ध्यान में क्यों नहीं आया?" ऐसा सोचकर वे दुःखी हो गए।

इस तरह से उच्चतम भाव के साथ किया हुआ कर्म उन्होंने खुद ही मिटा दिया। उसके परिणाम स्वरूप वे मृत्यु के बाद सातवें नर्क में गए।

सिर्फ उल्टी भावना करने से ही कैसा भयंकर परिणाम आकर खड़ा हो जाता है!

मीठी यादें

अमरिका की बात है। दादाजी एक महात्मा के घर गए थे। उन महात्मा को एक बेटा और बेटी थी। दादाजी ने उनसे पूछा, "तुम नॉनवेज खाते हो?"

बच्चों ने कहा, "हाँ, क्योंकि हमारी स्कूल में वेजिटेरियन फूड मिलता ही नहीं और खाने के लिए हमारे पास और कोई विकल्प नहीं है।"

दादाजी ने शांति से अपना हाथ आगे करते हुए कहा, "हमें नॉनवेज नहीं खाना चाहिए। प्रोमिस दो कि अब से नॉनवेज नहीं खाओगे।"

१२ साल की बेटी ने खुश होकर तुरंत ही प्रोमिस दे दिया। लेकिन बड़े बेटे ने दादाजी से कहा, "यदि मैं आपको प्रोमिस दूँगा तो मैं खाऊँगा क्या? फिर तो मैं भूखा ही रहूँगा।"

लेकिन दादाजी ने अपना हाथ वापस लिए बिना प्रोमिस देने के लिए कहा। बेटा थोड़ा हिचकिचाया, तब दादाजी ने उससे कहा "तू प्रोमिस तो दे!"

और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन ही स्कूल से सूचना आई कि आज से स्कूल की कैन्टीन में वेजिटेरियन फूड भी मिलेगा। यह सुनकर दोनों बच्चे बहुत ही खुश हो गए। घर आने पर दादाजी ने उनसे पहले ही पूछा कि "तुमने स्कूल में क्या खाया?"

दोनों बच्चे बोल उठे, "आज तो चमत्कार हो गया। आज से स्कूल में वेजिटेरियन फूड भी मिलेगा ऐसी सूचना मिली है।"

दादा हमेशा कहते थे कि दुनिया में चमत्कार जैसा कुछ नहीं होता लेकिन इसे अगर चमत्कार नहीं तो और क्या कहेंगे!

पहेली के जवाब

१

1	House boathouse - household
2	Back Sitback - backbone
3	Chain Keychain - chainreaction
4	Call Phonecall - callback
5	Ground Playground - groundreaction
6	Fighter firefighter - fighterpilot
7	Mother godmother - motherhood
8	Pen ballpen - penpencil
9	Fountain waterfountain - fountainpen
10	Door backdoor - doorway

२

पूज्यश्री की अमरीका सत्संग टूर की पूर्व रात्रि को सीमंधर सिटी में आयोजित बच्चों का खास कार्यक्रम

"मात-पिता का उपकार" पर डान्स

Akram Express

August 2015
Year : 3, Issue : 5
Conti. Issue No.: 29

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

"सीमंधर सिटी एक फैमिली" पर नाटिका

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २. पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.